ॐश्रीगणेशायनमः॥ अथगरुडपुराण अर्थ लिख्यते॥ श्रीगुरुचरण कमलभ्यो नमः
मधुसूदन जाहे एक पादप वन्न साजयति जय शान्त हाए कथं भूतं मधुसूदन धर्मवृक्ष
इ मूल कसाविसा मधुसूदन धर्मवृक्ष पकाया है चौतराजाने फार कसा विभगवान है चारजो
स्कंधः वदहे साईहे ठाणाजाके पुनः कथं भूतं मधुसूदन पुराणो शाखाढ्यः [illegible] कथं भूत कसाविस
धुसूदन भगवान अठाराजो पुराणहे साई शाखा पोगिया जिस्कि पुनः कथं भूतं पादपं नाम
विस्तु ऋतु कुसुमं ऋतुजो यसहे साई कुसुम पुष्पजीस्कं पुनः कथं भूतं पादपनाम वृक्षनाम
विस्तु भाव साई जिस्का एसाजो पादपहे सा मधुसूदन साजयति जय का शान्त हाए॥१॥ ठि

ॐ
मं॰मु॰
१

ताप भटला चटलाराबाय चमलाबाय हेतवाय मतवाय मनवाय मघडवादी
वाय खटे मिठदीवाय गुड अमलेदीवाय कमलवाय कोरा महीनेजाईजन्मी
माघे मासेजाईजन्मी मंगलेवारेजाईजन्मी वासी चोदसीयेजाईजन्मी तेरी आदज्ञा
रा मलादजारा जठा गारुडकरा ठीव्याध उत्तरे व्याधेतु भलिजारा उत्तरेजेता शिरे
वसेता माहादेव वसे तिथेता व्याधे वसरा नादेउ माथे वसे माथे चंद्र भाव वसे ता व्याधे
वसरा नादेउ पवरा पाणी वसे माथे व्याध वसरा नादेउ आषी वसे अषीनयरा देवी
वसे ता व्याधे वसरा नादेउ कान वसे कान कर्णराजा वसे उथे ता व्याधे वसरा नादेउ ना
के वसे नाके मंगलादीपुकी पयरा वसे उथे ता व्याधे वसरा नादेउ उठे वसे उठे आ
पपयरा वसे उठे ता व्याधे वसरा नादेउ जिह्वा वसे जिह्वा सरस्वती वसे तिथे ता व्या
धे वसरा नादेउ टाठे वसे टाठ मारध्वजजति वसे तिथे ता व्याधे वसरा नादेउ भोफ
रे वसे भोफरे वसे ता दामसारणीये वसे तिथे ता व्याधे वसरा नादेउ वमाडे वसे वमाडेपी रामः॥
॥१॥

रपकँवरवसेतिथे तांव्याधेवसराना देउ अडकराणी वसे अडकराणी टँकी कारीकी साल
रुपटवसे उवारसमुद्रपसुडे व्याह सामँते ई श्रे मारीहाकहरकी भवतागुरुकी शक्तफु
रे मंत्र ई श्रस्की वाचा। ॐ आदमगुरुतरा नारपवंजेवसेयवतां अर्जुनवीरवसेतिथे तां
व्याधेवसराना देउ हाथेवसहाथे धर्मराजावसे तिथे तांव्याधे वसराना देउ पीठवसेपी
ठेनोठारभारवनस्पतिवसे तिथे तांव्याधे वसराना देउ छातिवसे छातिनाहरा संतजनीव
सेतिथे तांव्याधे॰ कालजेवसेकालजे तांकालकादीपकवसे तिथे तां॰ ढिलिकुषीवसेढि
लीकुषीतां सिद्धिसागरवसे तिथे तां॰ राबटवसे राबटे तां चारसत्तवसे तिथे तां॰ रडलवसे
रडलतां नलराजावसे तिथे तां॰ गँडेलुरेवसे गंडेलुरे चारनजरवसे तिथे तां॰ फिन्हीवसे
फिन्हीतां वजुवरावसे तिथे तांव्याधे वसराना देउ पयेरवसपयेरतां मनुमाटीहोईजाई च
रुचकुवारे चारदेवीवसे हाडेगाडे उत्तारनसकेसे उत्तार साढमलेउत्तार अजेपालवडापीर
छाडजाहुरेव्याधेतुरहमरीर गँगागुषीमासीभाराजीसावलीभाईउत्तार आवरेव्या

ॐ

मं० मु०
२

धे दाहिणो पाय वगा बंड करगा ववगा बंड पाँज पांडो वमे भीम मेरो वाँज गी लाई वो
ज मह्रो गो ली वटो ली जाय समुद्र वाहांड फलु मछे बाई कालु लुहारे ओडा जाल
सफलु मछ जाले लागा दीली वच्या गुजरा ते वेच्या दशोजरा खाया वृह मंडल पडोह
वाले कंते वडी वाध्याई हूगी दे बंडे मंगले बा धाचगा चमारे चंवडे बा धीत्ते ते तलछड
का वगी लाई नकुले सुमले कूटगी लाई नकूले ची शूले घडगी लाई अर्जुगा
वो वागा कीलु भीमसेन के तागो कीलु हगा मंत्ते के मुदगरे चूरु हचन करे विकार नाक
रे शल्लगी सर्वा हनाकरे शूलनाकरे माथे मामे घेवो सुहारे काम मवारे लाडखाई
दाषेजंभरे वजीवरीये बंटे मीठे अमले मेघमंडले छाव न्हाए धोये कपडे देये अचा
विकार नाकरे रात्ति दिने सुना जागदे वारा विकार सभाका वंध कीलू हेन वंध सेत
वंध पवमा पाणी का वंधः गुरु वंध कुरुक्षेत्र का वंध आबुगा वंध माता पित्ता का वंध
फराका वंध अयंडका वंध नीरघंटका वंध जरंजनका वंधः कंचनका वंध मा· रामः॥
२

हादेवकाबंध चारवेद चौराशि सिद्धकाबंध एकबंध दोईबंध तीनबंध चौराशिसिद्ध
काबंध सातसतोषकाबंध आठवारकाबंध नवग्रहदेवतेकाबंध तेतीसकोडदेवते
काबंध नवनाथकाबंध सप्तऋषिकाबंध वाराजतीकाबंध दशदिशाकाबंध आठ
धूरकाबंध शब्दसाचा पिंडकाचा फुरो मंत्र ईश्वरकीवाचा वाचासोटलेतोकुंभीनरकमे
गले २ इतिसर्वव्याधिमंत्रशुभम् अथभूतप्रेतजडीमशारादा ॐश्रीगुरुकोआदे
स हाकमारोगांडफोरो हाथेवाजुलेह दुहाई कलूआवीरकीकाहूपेकहदेह ॐवि
समिलानकयोसीलाग मंहामदाविरआयावामे हाथकमानदेयोवीवीजिलेबांके
पूत्ता तूजागता आया ओरवाजता आया घुरता आया किलकंता आया तुरकायविस
बंध तीनगडुकासिंगबंध तीनम्हेसकासिंगबंध मनमाईदेवीबंध पीछावेठारावरावंध
रारगासुधिलकाबंध आकाशईदबंध कालाबंध कालाभैरोबंध नवनारसिंहकाबंध
दाडबंध वेदकंबंध भूतबंध प्रेतबंध देवबंध कालबंध डाकारीबंध दानोबंध छलबंध

ॐ

मं·मु·
३

छत्रिद्रबंध॥ तापबंध॥ निजारीबंध॥ अगीबंध॥ धारबंध॥ जिवजारीजिवबंध॥ ईकुलस
अमिहजारपिकंबरबंध॥ कीदुहाई॥ तेराविडा अनंतचल जिउंजिउंजारातिउंकरे॥ दामो
दरहमकोपकडदेवे॥ वीवीजिलेबांकेपूता सूंवरमुरदाभस्मगाकरे॥ वीवी आमाबांडेदूध
धीवे॥ ईलाईलाईलालिलाबयकूमहंमदवीरहंकारः॥२॥ अथमंत्रडंकगीका॥ ॐन
मो आदेसगुरुकों आदेस॥ ॐनमोनारसिंहायकपलकेशाय॥ स्वेतसिंहाय॥ वहुक
हुविभूषणाय॥ तवप्रसादे असाधसाधाय॥ डाकणीबांधो शाकणीबांधो॥ छूलबांधो
छत्रिद्रबांधो॥ दुष्टबांधोमुष्टबांधो॥ मडबांधोमशाणबांधो॥ हिमाचलगढमबांधो॥ ॐह्रीं
ह्रींह्रीं क्रीं क्रीं ग्रीं ग्रीं ह्रां ह्रां फट्स्वाहा॥ मेरीभक्तगुरुकीशक्त फुरमंत्रईश्वरकीवाचाफु
रे॥ पुनमंत्रडागकोशिरसोकरादि॥ ॐनमो आदेसगुरुकों शिरसाषेवस्वरा॥ पारेरायेकु
तला॥ पायतनरेहराकुसमकीडडीवेधज्ञानकरे॥ फूटफूटकेवेचरीमरे हाकनीडाकनीमे
रे॥ शेलीहुंदीदीपदहोठे॥ घरेघरेठंहंकादी॥ फिटफीरिहदेउ॥ समुद्रामाता पिंजराजाहो रामः॥

३

रे बचरी तहां संजरा गोरीका तंत्र ईश्वरका मंत्र ॥ मेरी भक्त गुरु की शक्त फुरै मंत्र ईश्वर
की वाचा ॥ ३ ॥ पुनः मंत्र डागको ॥ ओं काली काली महाकाली ॥ शिर राखे जटा मुह वि
कराली ॥ बाये डेरे मशाना हूध पूत अरा रिध सिध आरा ॥ चले चलाई आये बैठ उ
नई बारा ॥ वायुरी माई कालका की पुत्री अचक चयरा ॥ कालकंठ को भयरा ॥ इस पिं
डे उलाटक करे चेटक करे विज्ञान करे जिस को भछरा उर्ध कुंड मे फाटी फूटी मरे
मेरी भक्त गुरु की शक्त फुरै मंत्र ईश्वर की वाच ॥ पुनः मंत्र डागको ॥ काला लोहा काला तंत्र
कीलू डंकरी तेरा मंत्र आगे चर्या पीछे पूरी तू फिरे डंकरी मंत्र वहुरी ॥ इस मंत्र उ
पगर्भ करे डंकरी उर्द्ध कुंड मे फाटी फुटी मरे ॥ मेरी भक्त गुरु की शक्त फुरै मंत्र ईश्वर की वा
च ॥ ४ ॥ अथ पुनः मंत्र डागको ॥ कीलु लोहा कीलु तंत्र कीलु डाकनी तेरा मंत्र ॥ डा
कनी शाकनी डोर सिंहारी मार कुंडे पाथार समुंद पार आगे आवे ताला दाहरा
त्रिशूल अर्धकरे अर्धकरे अर्धकुंड मे फाटी फूटी मरे ॥ मेरी भक्त गुरु की शक्त

ॐ
मं·मु·
४

फुरमंत्र ईश्वरकीवाचा॥ इ॥ पुनः मंत्रः ॐनमो आदेस गुरुकों॥ हनुमंत वीर वपडालो
हुकाकीला॥ वज्रकछोटीलूतिशकाया॥ नासेभूतप्रेतकीछाया॥ इसपिंडेछाया
नावहे॥ एकवीशतीतागाजंय॥ २१॥ मोहरागामंतजपे॥ इसपिंडेकीरछ्यानृसिंहवि
र॥ मेरीभक्तगुरुकीशक्तफुरमंत्रईश्वरकीवाचाफुरे॥ इतिशुभम्॥ अथमंत्रचौथ
ईका॥ कालीकंकालीमाहाकालीब्रह्माकीफुरीईश्वरकीमालो॥ कडकचीनवहु
जावेलालीहरचंडालणीहरचंडालणीहरचंडालणीचामकीकूथलीथथली
हाडकीजपमालाफुरोमंत्रईश्वरकीवाचाफुरे॥ अथमंत्रजोईस्त्रीमरदनोडुगाक
रे॥ कुमारीकन्यासासूतकताईकेकरदेगानमर्दनोअछाहोई कंवूदेशकाल रू
कामाई ग्यारकीलोहकेल्याई कीलोडंकगीतेरीआखी ब्रह्माविष्णुमहादेवमा
ष्ठी कीलोडंकगीतेरेकान॥ रामधनुषलछमनकावान॥ डंकगीतेरीअमरीकी
लो वज्रीकीलोकीलोनामकुंडलकागोला नोदरवाजेकसरकीलोकीलोईश्वर रामः॥

४

रभोल्या॥ मेरी भक्त गुरुकी शक्त फुर मंत्र ईश्वर की वाचा॥ मुडे न चडे इंद्री पर ह्रस्वाहा॥ इस
मंत्र साथ ता गानो गांठ्या फेर धूप देवे कवंधे॥ रवि दिन ता चंगा होई॥ अथ मोहणी मंत्र॥ मो
हो जो होवसकरा नी नाहे पर मारा॥ सभा द्वार जाए के मोहे सकल जहान॥ पूला राणी किस राज
की वकरी पर जाकरा विलाय॥ इश्वर हमारा मानने ही नो को भेरकी दुहाई॥ हमारी भक्त गुरुकी
शक्त फुर हो मंत्र ईश्वर की वाचा फुरे॥ अथ इस्त्री मोहणी मंत्रः॥ कंवर मुदेश कमख्या देवी पर घरणी
पर ज्योगर जंदा आवेने राणी सलो राणी जेसो जा सूती काली पीली सरसों नूंभरा वूना जिथे जाय तिथे
फलाराणी सूनी होई सी उठी ल्याय उदाई ल्याव॥ उचटणी ल्याव॥ उभराणी ल्याव॥ हमारी सेजा सू
नी वे॥ जेसो चोदसी नाहीं॥ नाचूरहे पाव पवसी नहीं॥ नो कंवर मुदेश कमख्या देवी तेरी शक्ती मेरी भक्त
फुर हो मंत्र महादेव की दुहाई॥ विधि॥ हजार जप करणी होमे तो होम करणा: कमख्या देवि का प्रसाद
वंडणा॥ मंत्र सीधी होई॥ काली पीली सरसों मंत्र के उपराणी: सात वार मंत्र पढना वस्य होई सत्यं भ
वती॥ अथ मंत्र तेरे चौथई रुका॥ पिथिपत राजा सिलवाहणा॥ सिलवाहणा का अजेपाल॥ अ

ॐ
नमः
५

पालकाशोयवीर॥ शोयवीरके सातपूत॥ निनीपरम हजूर॥ निडोनेईया॥ चौथईया॥ च
वबीयरायतेलके बांधो: बांधोफलागीकीदेही॥ धरायेयईपजापांवधराउं॥ महादेवकीवा
चामांटलेतो कुंभीलूरणा चमारीकेकुंडमेगलेन॥ सातवारमंत्रपढे ७॥ ६॥ अथमंत्रडाकणी
कीलणोका॥ ॐनमोसवारासवाहा॥ हनसवाहा॥ ॐसतरपूर॥२७॥ वारएहमंत्रपढणा॥ डा
कणीदाशिरमुन्याजाय॥ जेहजुर अपरोकरणीहोइतो अपरोहाजुरहोई॥ ७॥ अथ
मंत्रडाकणीदा॥ ॐतासातरसानूसाजवानु॥ यत्नसरोभवरहूयहमंत्रपढनावार२७ सरसोंमंत्र
णीवालकोंकाडादेणाडंकणीदोयजाव ८ अथमंत्रथणोलेका॥ कछवालीका॥ वन
मोयाही अंजनीमाईजाहेपूतहराहमंत॥ काथथणोला ओरवाथमारकरेभस्मंत:॥ पुरु
कीशक्तमेरीभक्तफुरमंत्रईश्वरकीवाचा॥ एहवार मंत्रपढकेगोहेदीस्वाहाकीकारदेणोसा
तवारमंत्रपढसातहीकाकारदेवसूर्यदिने॥ एकदिनविचतीनवारकाडास्वाहाकीकारदे
याकरणीसुभीहोयसही अथहलकेकूतेयाकाउपाई॥ कुम्हारकेचाकतेभांडाउतारके सम:॥

५

जो मिटी रहे मोल्नेगी फेर अमृतका सुकाय के कपड छाणा करे ॥ फेर उसकी गोली करे जि
थे स्थान लडे उस जगा मे फेर मिटी हाथ फेर्या करे मंत्र पढवार ७ फेर मिटी देये जब तांई मि
टि मा केश निकसे तब तांई झाडा करे ॥ जब केश आ उगे तो रहे तब चंगा होई फेर सवा सेर तेल
काली काली काकी पीठी पर पावे ॥ सवा गज सालू ९ मोल्ली देवी के देहरे यगी जिसको कृत्ताल
ऊपा होरा उसते देया रहगा चंगा होई १० ॥ मंत्रः ॥ ॐ कालि कालि चरी पूना रूह ति पिव नि सि
ला रूहं आंवधे आरूहू ओकुरू कुरू आँ मंजारं हूं आँवेग चढि आवे हलक चुकते गुरु
की शक्ती मेरी भक्ती फुरे मंत्र ईश्वर की वाच ॥ ११ ॥ पुन मंत्र ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सर्व विष हरगाय फट स्वा
हा ॥ झाडा देगा वार २१ पाणी भी मंत्रगा वार ७ फेर उसते पाणी पिया उगा वार ३ सात वार झाडा
देगा तद चूली पाणी पिया रहगा इसि प्रकार तीन दीन पाणी पिया रहगा दिन प्रमाण वार ३ झाडा
देगा जब तांई केस आवे तद तांई झाडा देया ही करगा चंगा होवे सही १२ अथ कृत्ते वारण्दा
मंत्रः ॥ ॐ कमरू देश का जल मल कृता हो कैन भौंकै न या रग्न पीवे ईश्वर महादेव की आण्या

ॐ
मं॰ मु॰
६

लागे गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरमंत्र ईश्वरकी वाच साढ़ादेगा वार ७ वाजीकुला लागा गाल
गा विष उतरे ॥१३॥ अथ कुत्ते दी दाढ़ वन्ह गोदा मंत्रः॥ ॐ जागजा वगा वडी राय चोर न टके कुत्ता
न भौंके रक्त न करे गुरु गोरष राय मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरमंत्र ईश्वरकी वाचः ७४ अथ मंत्र प
हीका॥ ॐ वामी कुथी ववसे वामना वीरकी पही करे पाडी चीर आगे धावमीता हरामंत वीर की दोही
होसी मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरमंत्र ईश्वरकी वाचाः वाजतार ७ धगा लागा सुख होईः ॥७५॥ अथ
सर्पका मंत्रः॥ कोकला माई डरू वाजे चढदा वीशा पछाड़ु भाजे गोकुल म्हारे आपिया राजु
पि गीये विष घोलीके वाधा रूपे पीठी सुइने पाया गोरष राय ने कीया हुंकार वीशा जाये समुद्र पा
रः काली विली पीठी पायरः गोकुल मंत्र ठाई आसरः वेद ७ भी वेद गा वडी सिंह पलागो आ
पो चाढी तुर कालिनाग गी वासुकी यें धीये ते मेरा वेद्य विंस्या तूकया जागी वेद गी आदजा
गू पछत जागू काला घोडा काला वागा इनी मंत्र उत्तरे वासुका नाग दगीयर फगीयर चडया
चूडई वारा पुगा मीढारीया नागाः ठारा वठाई माढे गारान आई काला घोडा काला वागा॰ राम॰॥
६

सातुवे पताले जाई वासुका नागा मेरी भक्त गुरु की १६ अथ सर्पदंशे नक्षत्रः॥ यः स्मृतिका
मूल मघा विशाखा सर्पनिकाडा सुभुजंगदंत्येष्टः सर्वे नते येन सुरक्षतो प्राप्नोति मृत्यो वद
तं मनुष्य ७ अथ सर्पमंत्र गारुडः॥ जो धो वेधन रथा नागी दी माई: सोडा नाम करे वेसा
ला हर हर नागरा घाई॥ लहुडे वडे मुंधरडे चुगो समुदा पीर॥ पंथ पहारे विषहरे अमी झला
वे नीर इस पिंडे निर्विश गई सरीर जो दात्ता गुरु के तन डी काली मागरा मंथ लाई॥ हाक नडं
का जगावे सोई आक नडं कजगावे सोई:॥ अथ कोई पी हा पंडता यही याठा ठ्याचा इवेग
मंत्र वीर सामव वंल हर मंत्र॥ पुन गारुडा॥ हाथे को कल डौं रू वाजे चडदा विष पछांडु भा
जो॥ षडी पुकारे को कल माय: ही क्या गारुडदी या पहुचाय: गरूडे मारे वाही लाल जाये
रवी सा सत्तवे पताल: मेरी भक्त गुरु की शक्त॥ पुन: गारुडा॥ वांधों अष्टकुली की जाठ:
वांधो वासुकं का पवार: ईश्वर कहे महादेव षंधावे धूली येर चीह जुगो: मेरी भक्त गुरु की
पुन: गारुड:॥ विष उतारे थिन थिन नैन कमाई जो कोई डंक जागावे उठडं काज टा सम

ॐ
मं·मु·
७

ल नववीस गडकी ह्यडी: ऋगोत्तो लाला विमडोल: कलसँ भरे भतकडं उह्यर चूहर चरवरू
कराहुं: चुंजरी छोल वसाहु अमीया मेघधार वरारहुं अमीया काछी पपाहुं: चुंजे ठोका गमडे
थाहुं: गरुडे मोरे वांही लाल: ज्यायरे वीसा सतवे पताल: मेरी भक्त गुरुकी शक्त· पुन गारुडः॥
हाडकाकोरडा चवे मडियो उपरे छेल पछे वडा धरीयो अमीयेकी पाप साउ: ऊपा हर चूहर
रुकराऊ: अमीयकाकाछिटा पाहुं: चुंजठोक गरुडे थाऊ: गरुडे मोरे मारी लाल: जायरे वि
षा सत्तवे पताल: मेरी भक्त गुरुकी शक्त· पुन: मंत्र:॥ काचा कमुवा अमीया भस्या नेई स पारव
ती धरीया: इश्वर टाले पार्वति न्हाई मो भारवीसका नरवीस होई जाई: मेरी भक्त भक्त· पुन: गा
रुडः॥ ढोल ढमाके विल्ह जोग रजाऊं: धोये पीड सकरा सिरमे रटकारा: अेकल वे कल
छल्ल वछडे मराराडाली: ताथत्तल छलो वाधार मेरा वांरहे थडा निरधार तेलेवी वी गामन्हा राणी
विल्ह राजा राणी विहाराणी नौलख द्वारे नौलख वाडी स्वीना पीडा वल्ला चाटे गुरु मुद्रा
डे पडे सर्व दोष निवा गोडा छाड जीव ऋष पडे भूय: दोजरा लाग्या हेत्त: होछे गुरुकी वि

राम:॥
७

द्या मर्ना नरकेतस वँल हंसा के मकलाहा हुँसा हँसणी पदमणी सुइना घडे सुनार: तभे
इसपिंड्या डाना करे: मेरि भक्त गुरुकी शक्त० पुन: गारुड:॥ संवडुंड वडीवाजे कलम भयो
धनंतर गारुड तु चाहूरे आया: काली नागरा राजा पारडे स्याजगो वराजाहुं: आगा पीछा लो
टिक्या डी वैदो बांहु पूर्व हुदी नारी आई हुं हुंकार कार देवाई: इछारमट पंवदी आई वडपीप
लदहदी आई वहु खडु देवा गगरा माटी उत्ताल वाला नाथ चलाहुं: आगो गंगजमुनाते आ
लू कीला आठ कंठ जीभ सांतालू: तलली जाय तले कीला उपजाय कीला गास काली नागरा
के जाये तेतु काटे मास: मेरी भक्त गुरुकी शक्त०॥८॥ पुन: गारुड॥ एक पात वडलाउ दोई: पा
ने वडलांऊ तीन पाते वडलांऊ चार पाते वडलाँऊ: पंज पते वडलांऊ छे पाते वडलाँऊ: सात
पाते वडलांऊ: पर वडोटा लाँऊ: नाथे पाथे सर्प लांऊ: सर्व गारुड टलाटलाऊ देव सर्प तू
मेरी ओडे जांहां पहु चे गुरुकी हाक: तहां छाडे चाम्चाक: जहां पंहुचे गुरुकी दृष्टी तहां तू
करे श्रिष्टी मेरी भक्त गुरुकी शक्त फुरे मंत्र ईश्वरकी वाच: ९ पुन: गारुड॥ मल मत्त छ

रीदेसीवरोराहमराहछता लोपमेकेवटीवाले गडाधरीरधूरांदीमेंतटेथापकामे
ऊनरमोंपासायलो नमेकेवाटीवाले: गूगाहांथ्रमोदा गाढवीमरकाले: छांडेमो
टेहोकरडांडेपीवलेरतनाले मोतडीयायुगहीयेलेलयचितमनवाला एकजोनागाना
गावेटी: नागणीवास:हलालेनीकोचनलाई एकालीयादेगुरुजुवडेहरतभीतेत
कहीयेछेछेतीभावालेनवीधेवरधेवालडीगाहमीराहअवरवडीई: ईसलेयेकोवनलाई: ए
कामीयादेगुरुजूवडेवडेपटकुनाले अष्टकोडीनागाकंपेईहाकवरामसाले जेगराम
ने आपराजापरेहे सूर्यपयाले मेरीभक्तगुरुकीशक्त फुरमंत्रईश्वरकीवाच॥ अथसर्प
वन्हरोकामंत्र:॥ वडीकेपेटवडोटाजम्या जाकेडंकेमहादेवआया शेरवचूडेकेपांवडी
गजमोतीकोहार: पदमनीचलीपाराीयेलंकाहुयाजोहार: लंकासेकोटसमुद्रसी
याई: वांधोदाढवियचरकीदियोडुहाई: मेरीभक्तगुरुकीशक्तफुरमंत्रईश्वरकीवाच:
पुन:सर्पवन्हरोदामंत्र:॥ ॐआदमगुरुकोल्यायोगंगाजमुनकावालकीलोंतरीमा रामः॥

ईजिनिरेंतुजायाः कीलोतेरीवहशाभाँराजी जिनेतूगोदयलायाः कीलोतेरीराहवाटजि
सराहवाटतूआयाः कीलोतेरीवंवीजिसवंवीमेउलटानागसमायाः शहसाचापिंडकाचा
फुरोमंत्रईश्वरकीवाचाः वाचासोंटलेतोकुंभीनरकमेगले ७३ पुनसर्पमंत्रः॥ ओंनमोआदे
शगुरुकोंढोलदमाकामेसरायाकोकलमंत्रमेरानाचुंजांहांसुरोमेरानाउंः उंहांछोडचा
रेगांउंः जहांसरोमेरीहाक उंहांछोडेचारेचाकः शहसाचापिंडकाचाफुरोमंत्रईश्वरकीवा
चा ७४ पुनःसर्पमंत्रः॥ ओंनमोआदेशगुरुकोंकैलाकोंकलापरेसरधारे जटीदेनविटोवे ढो
लदमाकेविषउत्तारेः कालीविलीनीलीपाषरकोकलामंत्रठाईआषर शहसाचापिंडका
चाफुरहोमंत्रईश्वरकीवाचाः वाचासोंटलेतोकुंभीनरकमेगले: मेरीभक्तगुरुकीशक्तफुर
ईश्वरवाच ७५ अथसर्पगारुड॥ पहिलाआयावासुकानागापहिलाकतरागआयापहिला
षायापारीकराजा पारिकराजाकोंशायाया जधजायातधषाया पारिकराजेबृहत्तिचाली
वासुकेनागेअधमेढाली॥ फुलेकलीशिरलागी॥ शिरेउपरेषायाः शिरकलीपरहेठपडी

ओं
मं·मु·
८

पय सर्प खाधा ॥ तेरा गारुडी कौरा होंदा ॥ मेरा गारुडी जलधर वेद ॥ जलधर वेद कौरा होंदा
जलधर वेद समुद्र पार ॥ समुद्र पार कारा जाला ॥ समुद्र पार हरा मंत्र जाला ॥ दोई फुनार फु
ईना घडे ॥ दोई लुहार लोहा घडे ॥ दोई कुटरा हारी धान कूटे ॥ हुरा जावे हुरा आवे हुरा
हुरा काम कमावे वदरी वदरा पूछरा लाया ॥ तू हुरा मंत्र कौहांते आया ॥ हौरे वेदरा वे
दपे आया ॥ वेद वोले हाथो पर याड ॥ वेद वोले हांउं पर जाऊं ॥ गांठीर टोपी हरा मंत्र खोल्हे ॥ पाय
पर लडी हरा मंत्र खोल्हे ॥ सहु चलया डा हरा मंत्र दिन्ना ॥ कोकला मंत्र वोलदा चला ॥ सहका
काठ फलों दा चला ॥ हरेड फलों चला ॥ वासुके नागे अधमे ठाला ॥ तूरे गारुड कौहांते चला ॥ पारी
कारा जा सर्प पाया ॥ पारीकरा जा मेंही बाधा : मेरे बाधे कौरा जियावे ॥ तेरे बाधे हांउं परी जियाऊं
तूरे वेद क्या जारा ॥ नौ कौह अगांहुं जारा : नौ कौह पछांहुं जारा ॥ क्या डी पाछे मंत्र जारा ॥ उ
ल्टी सर्प क्या डी पाया ॥ वेद ने वेदरा वडी को किला मंत्र वोलदी चली ॥ छमाछि मूवे जियावे
दी चली ॥ वासुके नागे अधमे ठाली ॥ रे वेदरा कौहांते चाली ॥ मेरा गारुडी सर्प पाया तेरा गारु
डी मेंही पाया ॥ मेरे बाधे कौरा जियावे ॥ तेरे बाधे हांउं तूरा वेदरा क्या जारा नौ को

हु अ गांहुं जारए नोकाहु पछांहुं जारए क्याडी पाछु मंत्र जागु ठंगे ओठ वडे एकोटे हरी
वउम कोशालिई दुधकटोरी रसिंज गालाया चारि धूरा वांज गी आगी पाताल समुद्र वांज
आगो तातेल छडकगालाया मुनापीहं गूगा मेरीये माया विष मेरा निर्विष जायो चारे वेद
की वाचा आदम गुरु को धन्वंतरवेद नागादेदा सि आये मोर मोर पर मोर वैस रहो नागन
वारु विष संकल हरहि मारे काला कुमाल लहर मारे: पगवेठ वासुकि की रागी ठुंगे मा
र करे विष पागी नील कम्ठ की पहोडी गल मोती को म्हार: पदमन पागी कलेर लम्का
लेहा जुहार: लम्का सा कोट समुद्र सी वाई गौरी के सिर हो इ उत्तार: उत्तर विशा नो को
गुरु की दुहाई नो नाडी सहो उत्तार वहुत्तर सा कोठडी सहो उत्तार जो उत्तारे नाही तो शि
व शक्ती शिव शंकर विशा नशंता: मेरी भक्त गुरु की शक्त० अथ मंत्र सर्प का॥ मुक्ति मुस
त्य मोम मराम जाई शून कोटको पागी प्यावो कटया उत्तर जाइ मेरी भक्त गुरु की शक्त फुर०
वारु वार २१ मंत्र के पागी प्याव के कटे को के थवर त्न्याव रो वालको विष उत्तर जाइ:

पुनः मंत्र गरुड॥ ॐ आदेस महादेव कैलास वसदाहैः कनंलगे वसदेका रनहोइर
हे दाहैः विषमुषपयोफरा विषमुषपटरा हारः आदवचन गुरुसम्हले। जो विशास
नाहारः कहो सूता कहे पहुता: तेनर गरे कमलासः ब्रह्मा अछरसाधिया तो वीशा
नविश होईः इडो तिलाकरि दांतपीडा रगतेले वहाय मेरी भक्त॰ पुनः सर्पमंत्रः॥ वि
षसनि पुत्र भर गरुडकी डोही गुरु शक्त मेरी भक्त फुर मंत्र इश्वरकी वाचा पाराा मंत्रीके दे
राा के भर मंत्र ढोल पर लिषके ढोल वजा रा विष उत्तर होई॥ इति सर्पमंत्र सपूर्णा शुभमु
अथ मंत्र विछूका॥ ॐ विछू करि याला मुइने काडंक रूपेका पनाला उत्तरतो उत्तारे नहि
हन मंत्र वार हकार जा हिरे विछू गुरु की शक्त मेरी भक्त॰ आदेस लोहे माथ सत वार मारे
विश विछूका उत्तर जाई॥ पुनः मंत्र विछूका॥ पारसमुइ लाई वाडी तेते उपजी केल वहाडीः के
ल वहाडी की या गोहा तेते ते विछू होयाः टकरे विकुर शाराा याराा पाथ रहे ठे कुशाराा: आ
आदजारा मुलादजारा हंमे गरुडे छाडी लालः जा विशा सतने पताल: मेरी भक्त गुरु॰ २ रामः

पुनः मंत्रः॥ ॐ नमो आदेस गुरुकों तेरा नाउ: काल बिछू कुँभर वाना: सूहो गाइ के पेट उप
रंना: कहरे बिछू तेरी जाता: तूज म्या आमावास्या की राता: अपरी की डंडी म्हे सकी धार:
उत्तरो बिछू लगे न वार: शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र महादेव की वाचा: चील्ह का छिल्ह
काला वे ३ अथ माहुरे का मंत्रः॥ आदेस गुरुकों: प्रिहिल्ले का पीपदी का घट: घट
का नर घट: नर्घट का निराकार: निराकार का निरंजन: निरंजन का कंचन: कंचन का ईश्व
र: ईश्वर का ब्रह्मा: ब्रह्मे का विष्ण माहुरा: तां कोरा कोरा माहुरा: मिगी मकुत्या का रीरा: हल्ला
ल माहुरा: गेरू: हलदू: कपडे आल: छेडे आल: कंड्या ल दूधिया: लभगा माहुरा:
ॐ तपत दयाया काठी उत्तर माहुरा गोवर माटी दा: काल कूट माहुरा हरे वहाथे वावे पारा
टले: ईश्वर की पूजा टले जेतू बाधा माहुरा: उपर चढे सिर चढे: अचु चढे: तीस पर्वत योध्या
हुपडे: मेरी भक्त गुरु की शक्त फुरमंत्र ईश्वर की वाच: मंदर मंधी वे धा काली का पोष
री ब्रह्मे जे काटी मिटी उत्तर वीशा गोवर माटी: दाहिणो हाथे वाय हले: जेतू बाधा माहुरा:

ॐ
मं·मु·
१२

ऊपर चढे सिर चढे अवर चरणी माटी जिऊ ढमे पठे: तौ गुरुकी शक्त मेरी भक्त० गा
गी गुगी दोहाई वहरा जिसकी सेजा तूपा धरे तूया धा माहुरा ऊपर चढे सिर चढे आ
चर चरे अनिल परवत जिपोट हूपरे गुरुकी शक्त० होमकटी फत: तूसरा ह्मारा बु
त्ता: गोरी पैर न्माई चरे थाये पीट महाजाई: गुरुकी शक्त० १ उगु निगरे विशा होव
तेरी हुठके वछेडी: तूसेरा सर्व गुवाल विनाथा या हि फटके विशा योहरीयाकु० गुरुकी
शक्त फुरो मंच इश्वरकी वाचा: २ पुन: मंच माहुरेका॥ मंच तूरा माहुरा कौ गुरु परिरज्या: तू
जिसदेषे दरा॥ परमा गडेरा सी रात्ती जाया नारायणा के भागाजे माहुराई नी मंचे निर्वि
शात्ता: मेरी भक्त० उपाय:॥ अकका दुधलेग सेती मर्दन करे अंजन करे माहुरा विषजा
ये: चावल के धोरो से ति माहुरेका विषजाये॥ पुन:॥ अंतली के परस सेति सर्पका वि
षजाये॥ पुन:॥ निंबके रस सेति डंकपाछ देइके मलेसे धीलेप करके विछुका विषजा
इ॥ अथ फीमके विष उतारनेकी औषद॥ स्वेद रागकी जड पीसिके उसकी पारी पला राम:
१२

वे विष उतर जावे पुनः लाल बाँग की जड देवे विष उतरे माहुरा विष उतरे॥ पुनः औ
षद भाग की भांग की औषद भांग की जड पीहके षटी छाह देणी अन पीछे तेदेणा:
भांग उतर जाइ॥ अथ मंत्र सर्प का॥ ओं नमो भगवते श्री घोरो हर हर दर दर पर पर तर
तर वर वर धव धव ल ल ल ल हर हर भस भस सर सर गं गं क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं भवा वाति
श्री घोरो षः षः ठः ठः संसं वर वर वस घटा वर रूपे ह्रीं ह्रीं टवर पिंगम मानुष्य
यो मछ मंत्त वव दव द सेवरी ठः ठः स्वाहा: मेरी भक्त गुरु की शक्त फुरमंत्र ईश्वर की
वाचा अथ चोरी जाई घडे फेरणा का मंत्र॥ गुरु गोसांई को नमस्कार: पारलंका आपकु
म्हार त्तिनि घाटी मीठी ईश्वरे चढी गोरी हार ठाउ आया ईश्वरे पडा भमाया फिर फेर ईश्व
रके तप सीत्ताके सत्त: हन मत्त केडुये काल्का के वचन: गुरु की शक्त मेरी भक्त फुरमंत्र:
अथ चावल को मंत्र चोर को॥ पंचवीर की नामंत्र: आरणा चावल वानो तंत्र: कीत्तू शोधम
ल पराये साधेराये चोरे मारे मेरी भक्त गुरु की शक्त फुरमंत्र ईश्वर की वाचा वार ७ वार

मंत्रः॥ अथ कठोरी कठोरी दा मंत्रः॥ ॐ हरि धमली अधमलं लीजे शंषपटणा का हल्दी
जे चलो ईंद्र अग्नि वलो तेंतिस कोट देवता चलो नारायण चलो शिव चलो सूर्य चलो मेरुमग
डंवर चलो कमख्या देवी चलो आज्ञा फुरे: चलो हो चलो वेगवंत हो य चलो: ईंद्र राजा की आ
ज्ञा ही मी चोरानो कुंड: साध सचारय झूठे झूठी विचार: महादेव आज्ञा हुआ मंत्र वीर की आ
ज्ञा चल चल फट् स्वाहा पूजा डांडी करणी: पंचगव्य भी पाणी डोरी वन्हणी: मेरी भक्त गुरु
की शक्ति फुरमंत्र ईश्वर की वाचः॥ अथ चावल चवाणा दा मंत्रः॥ आ नहो चाव मुलो पंतः तूसो
यया का लो या कंतक पडीया बुल हो निरवीरः चावल चवाडा चवाहथु क शोषः हूं होठ कंठ
भारी हो: साधा चारों वीर हो सच छोड हो असत मार हो सोषिया वीर तेरी आज्ञा चले मेरी भक्त
चोरी दा मंत्रः॥ ॐ नमो सिद्धी रामा चले राव्रा चले ईंद्र कि ईंद्राणी चले संसार तेगयद चले
पाताल ते वासुकी नाग चले: इकल वीर हनुमंत चले मुणी हो ना राजा को नार सिंह तेरी षे
रक्त तेरे मंत्र फुरे ॐ सिद्धि स्या कोरा कागद कुंमारी कन्या के हाथ देणा: अगमे करणा स्वे रामः॥

तशेन्हो कागज उपर वे ७ मँत्र पढिके पाणा कन्याके हाथ चोरका नाम लेवाणा॥ पुनः चो
रमंत्रः॥ तिषतालो उ सुषतालो नाटे दर्व दर्व खाली॥ तिन चूल्हू तीन पाणी नाठे दर्व आणी॥
आली माटी काटी कुकल्मरः ताता लोहा घडे लुहारः आला सुइना घडे सुनार॥ हे
रीहेरी सूर्य्यहेरी॥ रातनी यातो चंद्रमे दिठाः दिननी यातो सूर्य्य दिठाः॥ चलवे उत्तावली च
लः दखणानी यातो दखणा चलः॥ पछमनी यातो पछम चलः॥ उत्तरनी यतो उत्तर चलः॥ मा
धदेय लूके चोरदेय दूके: मेरी भक्त॰॥ अथ ईस्त्रीपुर्षवधनं तिसका मंत्रः॥ आदेस गुरुको
र उलटंत वीर पलटंत वीर कायाः॥ छ। छोड छोड चोरकी मायाः॥ राम लछमनकी सीताकी
वनमा जाई राम लछमन जाय करेः॥ चोरको छोडो तत छिन माही गुरुको शक्त ९ रत्ता यान
फ्च मिटी करिहा फुघ सिरी करी पचलिष याणा ९ अथ कमल पितका मंत्रः॥ काला धोला
दोनो भाई काला वध्या कहुन जाई: चिपी को पल्ले पणी हो रः जाइ गुरुकी शक्त॰ अथ
पानका मंत्रः पचपच पानपच मेरे मंत्र मोहन शचः जिस देवा दिहो रग मित्रः मेरी भक्त गुरुकी

अथ रत्नाँजुलिका मंत्रः॥ रत्नाँजुलि अउ दिठि मेगरुडे चुराणी चुराणी बाई गरुडे धस्या जि
हा भाई: सत रत्नांजुली दानि चुकाइ: पार समुद्रदी चुकाई कंवरु देश कमुख्या माई: लू
णा चमारी की अख्या धाइ: त्रिसपलूट त्रि रत्नांजुली नि चुकाई: गुरु की शक्ति मेरी भक्ति॰॥
लूत्त दा मंत्रः रामेद हा सरमास्या चोघोट साथ पीडा सित्तर कर्य लूत्त करो भस्मा भूत: मेरी
भक्ति॰॥ अथ नांवी दा मंत्रः॥ गँगा गोटका मगा बोट: मद पार मछली बाया डंकपेसी
पीडा जाया हरे जोवरा लूणा चमारी हणू वीर तू हुँकार उ ताना ही ताठो हणो हणा मंत वीर
हुँकारो उत्तरे हणा मंत वीर की लि कलावे अठोत्तरसो व्याधी मेरी भस्मा होई जावे लोहलंग
आई अवरा भीमे वटि हाकी श्रीरामे पाली अजनि तेसा जाया पुत्र हणा मंत: अठोत्तरसो
व्याधि मा भस्मंत मेरी भक्ति॰ अथ फोडी दा मंत्रः॥ गरुड समुद्र गरुड समुद्र मार समुद्र फो
डी श्रीरामे तोडी हणा मंत मार छिदि डी फोग लि फी ही गल गुदल हावो गोनूर विशयुस
शक्ति गोरख तरीरे षरे ष देणी ३ मंत्र पठणा॥ गलघंडी साहणा दा मंत्रः॥ गोरी पुत्र वि

नाथकजाया: कालूयेकमोरघडीहाँडी भटयाइगईघाडीहाडी उवलेच्यालनहुडेगा
भरू उसाहे यातीलू गुरुकीशक्त० मँत्रनासूवेदा:॥ वानकावेठीयाईजनेउतारीकूयेमेडा
रीपकेनफूटे जलितलिभस्मतहोई॥ यादेहीमेनासूवारहेतोदोहीगुरु: पितानाथकीमेरी
भक्त १४ गुडकीगालीकरणीवार ७ मँत्र: घोडकाशोमनासूवेपरवांधे॥ अथमंत्रइस्त्रीडा
ससूतका॥ करकरनमोराक्षसोंतस्यनम: गुर्वणीप्रसव्येतस्वाहा:॥ इतिमंत्रतेलमंत्रणा॥ इ
स्त्रीनोमर्दनकरेशीघ्रंगर्भप्रमुच्यते॥ मंत्रपहीकालजेका॥ सूरहगाईकेपेटमेकछउपजाका
लजा: कालजाघटे सर्वधेमेरीभक्त० अंगुल ७ काकानालेयेवार २१ झाडाकरणा सक्तांठ
काकानालकरणा: फेरजत्ताकानावधेतेताकथणा॥ अथवाईकालजेकामंत्र:॥ केल
स पर्वतकेलासपरवृत्ते उपरकेलागाईकेलीगाईकेपेटकेलावाछा: केलवाछेकेपेटके
लाकालजासूकेसर्वधे: मेरीभक्तगुरुकीशक्त० २ ससर अंगुल ७ अथबांधीडाकणी
दामंत्र:॥ लाहुपाकलाहुनपूव लोहूनपडेनहोई: श्रीगोरखनाथकमस्यामाई: मि

त्रिकारी अधिदीपीडा चुकाइ: मेरीभक्त गुरुकी शक्त॰ अथपटपीडकामंत्र:॥ लहमराजो
शूल व्यापी हुरामंत्तल्याया सूल: आपपीजिपाणीया आरकोचूके शूल: मेरीभक्त गुरु॰
मंत्र वेर ७ पढेलाहु किछुरीसां पाणी मंत्रराा२॥ चुल्ली पलावे हारकीसीनो पट शूलजावे
अथपटपीडगालकामंत्र:॥ श्रीरामचंद्र चढिया हुडाराम चंद्र चढिया गोला: नाथु महत
पाणीकीत आपीतारामा दिनाम उतपगोला: मेरीभक्त गुरुकी शक्त॰ सात चुली पाणी
पलावराा॥ अथसीरपीडका॥ ॐनमो भगवतेनमो गुरुको आदेस: दबराा दश मारुकाकु
पा: उहांस्थवेका पांव: म्हारीठाकीडुबेन सिर: मेरीभक्त॰॥ अथमंत्र आधासीसीका॥
काली चिडी चुइ चुइ पवे धवली पवे नपास आधासीसीतोडीलीयालहमराामारीहाक:
पुन: मंत्र:॥ काली यागिणी कीलक मारे राती योगणी हसी हसिमरे: हुरामंत्तवीर
हाकमारे आधी सिसिनसे: मेरीभक्त॰ अथदसनडुषराकामंत्र:॥ इंडाकीलो पिंडा
कीलो कीलो जाडकाकीडा मेरीकीलीपीडाकरे तो हुरामंत्तजत्ती कीडुहाई फिर मेरीभक्त॰

अथ दाढ पीडका मंत्र:॥ समाल सही रु मंत्र सात वार गुंठे साथ गलमा छु हाँवे कोरे दाढ को
कागद पर लिखे पीडा दुर होई: ७७७॥ अथ मूशे की जिठ तिदा मंत्र:॥ मूशा समार दोवा
हुन गौरी पुत्र विझ्न वाहन: दुषे षति वन्हा दाढ गुस्की शक्त० वार ७ मंत्र के मेहो षति वि
च पारगा॥ अथ वाघ दा मंत्र:॥ वाघ रवाघ रे तिको राजात अचल वीर वन का राई: चोर नस्के वा
घन षाया: डंदर हस्की मूडो माई: इम वन छोड हो अवर वन जाई: वन के मृग को ढोल ठो
ल षाई लंबी पुंछट छोटे कान: इम वन अंचवीर पीर की आन: छिन अंदर छिन वार जाई:
ईम वन छोड आर वन जाई: छिन वामे छिन दाहणो आई: दुहाई अंचला पीर की आव हमा
रे वगामे का वाघ बुला या भीम दुहाई: अंचला पीर की जे आव हमारे सिम: मेरी भक्त० विधि
जिम वगामा वाघ आई तिस राशको०० ------ लेगा जिस राश राहु हाड उस राश के रु
षकी ------ लेगा सो मेषु माहु लेके सिर देगा ------ वाघ या मक्की मीना आवे --
--------- की सिर सो चार दिसा डारनी दिसि दिसा हटदे आवगा: जिस मनुष्य की राश

गहहोई उसते मेहो गटीते अवगा ॥ अथ शशमूशे का मंत्रः॥ शशे मूशे हूयेमे
हगा आठसो सोलीमेहो के दाशो लूगा चोराहे की धूडलेगी मशाशा की धूडलेगी
आरशाकी धूडलेगी॥ मंत्रः॥ हाके शशे बुलाये भीम डुहाई होई अंचला वीरकीजा
आखे हमारी सीम मेरी भक्त॥ विधि॥ सभ वस्त्र कठीकरके सूर्य्य दिने मंत्र वार २३ छठ
तिथ लेगी सिंह लग्न लेगा येति विच जाइके फूक मारे मंत्र पढे सभ वस्त्र उडावे पिछे पि
छे हटके आवगा हथ ताली मारगी गहे शशे गहे शशे॥ पुन मंत्रः शशे मूशे डुहाई
साहगा जोरी पुत्र विनायक वाहगा वाट घाटकी मिटी मसाशाकी छाँई माथ चिच आ
वे ताँ हगा मंत्र की डुहाई मेरी भक्त॥ ॥ वीनपन्हगाका॥ मंत्रः॥ वादी आये वाद करे
ते आवे वादी बैठो वड पिपल्ल की छाँया बाँधो वादी का कंठ अरु कछाया बाँधो वादी
साजवाज बांधो वादी का छानिरा बरी वेल की चूंवडी हरे बाँस का नाडा तुवी को बाँधो
गा भरा वीर भरा मत वाला जल बांधो थल बांधो बांधो तुंवा ताँई चुप होरे तुंतुवडी रामः॥

हुणामँतजतीकीडुहाई: शब्दसाचापिंडकाचापुरमँत्र ईश्वराकीवाचा ॥ वीनबोल
गोकामंत्र:॥ लँकासाकोट समुद्रसीबाई: बुल्हवोतुंतुंवडीतुंहुणामँतकीडुहा
ई: जलसांवाल थलसांवाला बोला तुंवाताँई: वालवोलरीतुंवितुंहुणामँतकी
डुहाई: मेरीभक्त: ॥ ७ ॥ ढाल पैसेदामंत्र: ॥ वालरयेवालनीकपालरयेअर्जननाथो
गोरखपारवतीलेडडेवीरहुणामँत मरीभक्तगुरुकीशक्त ॥ अथकोल्हूथमणोकामंत्र:
कालाभेरोकपलीकेशकानमुद्राभगुरसेशडँडीकालीहाथलीरेनोबँडपृथमीसा
थलीए पगषटारशिरजटाभेरोबुडाऊनिनमउसाउआशामोचापिंडकाचा: फुरमँत्र
ईश्वरकीसाचा ॥ ७ ॥ अग्निथमणोदामंत्र: ॥ ॐनमोआदेसगुरु:को अग्निजलंतिकर
धरोमेचीतुभतुहाथ: मेतस्त्रंधिपादेनारायणा साथमेरेओठकंठजलेमुषतल्हू
जलेतोगोरापारवतीकोंचीजले: मेरेओठकंठजलेतोमहादेवकीजलै: मेरेओठकं

ॐ
मं॰मु॰
१६

ठ जलै तो मुष तालू जलै तो अँजनी कोंही याज्ञ लेः मेरो ओठ कंठ तालू जलै तो निरं
जन की धान जलेः मेरी भक्त॰ ॥ पुनः अग्नि स्थंभन ॥ अग्नि थंभै अंगार षाई हाथ ज
लै न गोला जलेः मेरी भक्त ॥ अथ कडाही बंधन मंत्रः ॥ ॐ उपछी मदे सत चल्यो तो ई
सीतल षमराष्ष मचटाई ईश्वर भोला थंभै गोरा न्हाइः तेल कडाही पाणी होई जाइ
चूहू पीछे हनु मंत षडा हाथ पालि काढी लै मुंदडा पोडा बैठी गोरष हाथ दिष्टि दे
षी पानि होई जाइः मेरी भक्त॰ वार २१ मंत्र पढै कडाही ठंडी होइः तेल जलै नही
अथ धार बंधन मंत्रः ॥ ॐ धारा धार मज धार बांधो लोहे की धारः धार बांधो सात वार
रक्षा करे श्री रघुनाथ आवै लोहू न फुरे घाउ ॥ मेरी भक्त॰ पुनः धार बंधन ॥ मा दि
केन सहकरा मलै तूहू हरः कटी घाउ कटारक्तः नेही घाउ नही पूजा चंडीर आ
ज्ञा घाउ महकजाः तूतारे पढंतः मंत्र राई का ॥ राई राई महा राई लंका पारते किने
मंगाईः जो राई तेरा जा यो भेद दो जणो का करे विछेदः एको गा मारजा एक सक भा रामः ॥

व द्विजरोपाविछोडा नावकालाभैरोतेरीवाचा फुरे डंडोरा दिन दिन घरे मेरी भक्त०
वार ७ राई मंचवी दोइ विचपाणी विछोडा होई ॥ अथगोरे चालालुकामंत्रः ॥ ओं
गंगा जमुना सरस्वति तहां बैठे श्री गोरषज गंगा जमुना सरस्वति गोरष वाला गोर
षजति तहां मुषन पाके पाव नडंमे गोरषवचने पीडा कटे मेरी भक्त गुरुकी शक्तः पाणी
मंत्रे वार ७ मुषबुरधोरो ॥ अथकीडे व्याधमंत्रः ॥ ओं नमो पश्चिम देशे वज्रीसुर नयी ति
थेते व्याधी चारी वेतप श्वरगो वैषपत्तहां गो चाटी मसेतेपूर सनमघवा रुचकौरा कौरा उपान
मुरवबुरवाअवडोरोग शिरघुंजे मुषलालकरे गडके पिंचर चरसि गडके पिंडे विध्यानकर
सीताभ ऋषीकी आज्ञाफुरे मंत्रईश्वरकी वाचः षडाशी ऋषीकी आज्ञाफुरे वारावरसा
षषरो ॥ जतीये गुरुकी वाचा चारी मुषनपाके पाव नसटे गोरषवचने पीडा कटे गुरुकी
शक्त० पाणी मंत्रवार ७ पीरोनो देवे गोरोगजावे · पुनः मंत्रः गडकेरोगकाः ॥ ईश्वरकी वे

ॐ
मं·मु·
७

टीबंझकीसाली गरुडगलेसाई आवकीउत्तरेहोतो संतियुक्त गोरषनाथ महादेवकीदुहाई:
मेरीभक्त॰॥ अथकीडेकाडयोकामंत्रः॥ वडेहेठवडोटालाया तिसकेपेडेहेठ महादेवबैठाया
शेषचुडेकीपावडी गलमोतीकाहार: लंकाजलतेसीता निसरीलंकालेजुहाथ मीसका
कोठ मिटीकीवाई: रुडगरुडकीडेगलगईवाईमेरीभक्त॰ पुनः मंत्रकीडेकाः॥ गंगाजमुना
सरस्वति तांहांबैठागोरषजति गोरषजतीयेवोईकचारी तंहांचुगेगजहमारी पाकेसुनफाट
बुरी फुरेमंत्र महादेवकीवाचाफुरे: पुनः मंत्रः॥ उंसातसतनिकसातभाई सातो मिलिकेदि
हाई रुडेकीडेवांधोसांई हराहमंतजत्तितेरीदुहाई रुडेरुडेधोलेतेडुपडे मेरीभक्त॰ सत
वारगटीमंत्रेकरकेगोम्हेसाउपरसटेकीडरुडपडे॥ अथगोकीमांदकोमंत्रः॥ लुवा आस
नगुरुकीकावंधः पंचेपात्रीदीजेवांधलंवा आसनवडीध्यान पिंडप्राणकेपासदिनरषे
प्राणसूर्यदेवता रातकोराषेचंद्रमा धर्तिमाता सदारषे जिंदुंपुकोराषेमाता लोहकोठा
लोहकाजीनलोहकाभुरगीन उचासाकोट समुद्रसीषाई गोद्रमन्या गलघोटुअभसा रामः॥

भूत होई जाई मेरी भक्त · मंत्र पढे वार २१ धार दूध मे सका गुगल धूप दीपजे मरा गडा कपडा
सवा पैसा लोहे की मेख कुरराणी गौका दूध अंगुल १२ एरंड कील कडी ७ वारा २ अंगुल
की माठी के बिच चारा हे मे गडा रराणी कचील्हसी बंडा रराणी धूराणी गाड मे सनादेराणी गटगो
रखनाथ को देराणा कपडा दीजे गोका राग नसर ७॥ अथ मंत्रः॥ ॐ गंगा जमुना सरस्वति जे
हां बैठे गोरख जति गोरख जती गोरख जती वोई क्या रीतां हां चर काम धनुह मारी अंत गरुष
वजंत गवाडी मरा मरा विष झाडे दिहाडी: जित्तना वावे पीवे तित्तना ही फले गो की रक्षा श्री गोरख
जती करे मंत्र पढे वार ७ गोरख की पूजा करे आदित्यवार मंगलवार के दिन लोभन कीजे गो को रा
गजावे ७॥ इति गो मंत्रः॥ अथ धिराचदा मंत्रः॥ ॐ नमो हनुमंताय किलिशद्वाय: भासनाय विध्वं
सनाय: अचल चलराणाय हुरा मंत वीर सर्व दोष निवारराणाय: हुरा मंत वीर की रक्षा फुरे: मं
त्र पढे वार ७ धूराणी देराणी सही॥ ७॥ अथ नाराणी नो वन्हराणा कौं सिरसौं करराणा मधराणी नो वन्हराणा॥
कौं कौं कौं वल की कलि कौं कौं चुपड डाली विधर्त्ता भर भर भंडार भर दत्त नाचले मेरा

ॐ
मं० मु०
१८

तेरा धीऊ नौरणी काकरांडे चौरोडा कय लंवा मधाणा: अपणा राय पराया आणा
चडे सूर्य छाडे सोउ अठ इहथ गुरु की शक्ति: १ अथ दूध किंडेदा मंत्र: सरसों
करणा का॥ उंहं विली होर पंचारी की लू डाकणी होर सियारी सत्त का दूध विरलन
हारी अकरा मयरा रषे लूरणा चमारी गुरु की शक्ति० २ अथ सरसों करणे दा मंत्र:
ॐ काटा काटा लो चमकूट दूर मुषे मेले मिल शिव शंकर मुष मेले काल शिव शि
वकर भूत मशाणा डाकनें शाकनें भूचर षचर चौ शठ योगणी गुलि योगवो गंठ ९२ देणी
ॐ नार सिंह वीर गोरष वीर पंचवेताल हमारी अज्ञा फुरे ३ अथ पंचवीर मंत्र सरसों
धागा चावल करे मंत्र पढे वार ७ ॐ पंचवीर पंचवेताल हम सिधी ब्रह्म कपाल ब्रह्म कप
ले दिनी रेष डाकणी शाकणी की या मिलावा जावंडे वीर दृष्टी पाई भस्म मुंडी षा
षा पाई मेरी भक्ति० ९ अथ सिरसों गढीदा मंत्र:॥ कालि कालि महा कालि मदमासे
वियाली चार षाणी चार पाणी धरती आकाश चौ राशि लाय जीव जानि सूर्य

रामः॥
१८

चँद्रपोरा पाणी गुरुकी शक्त० शिर गांठे गाँठदेणी रक्षाकरे अथमूर्छा काधाण
पाणी करणेकामंत्रः॥ समुद्रमध्येदीपदीपमध्येलंका लंकामध्ये सेता फटक
सत्ताफटक ऊपर आदिनाथबैठा आदिनाथके हाथ लोहेकागजा लोहेकीग
जाकराकर मीमार मोचमूर्छा मृगीभार सिवाय हमामंतवीरकी आज्ञाफुरे ॐ
ठंठंठं फट् स्वाहा गुरुकी शक्त० आदिनाथकी आज्ञाफुरे अथबालकनोरोई
लगतिस्काकामंत्रः॥ वहणा सहभागयांतु स्तनमेरा काढियाः ईमबालकनोहेहा
उलागी निसरयोलया भूतप्रेत पिशाचीकजोठरीजाहुं जेइत पिंडरहियातो
अधापनाथकापनआज्ञा गुरुकी शक्त० अथबालडायणीदामंत्रः॥ बिसमिल्ला
आव अंमकहं कलकेपहनेनू अधहनमंत हत विहीस्त सिवाहा मेरीभक्त०
विधिः जोवानू ७ पाणीवडीसवेरहीमगावणा फर इहमंत्र ४५ पंतालीवारपा
णी मंत्रणा फर एकांतकुल्ला दापाणी मंत्रणा पाणी विचरवणा दिन ३ सत

ओं
मं. मु.
१८

चंगा होई फेर सरसों पीली मंत्र १८ वार इस मंत्र सों नीलि कपड़े विच पाइके गल
बांधे डंकणी दोष जाई। अथ मंत्र डायणाका॥ अचल चलन्ती मेचली पथ्थ ले उपरहा
णा डाकणी शाकणी वेग बंध इक आणा कोणा बंध इ आणा राजा रामचंद्र का भाई
लछमणा कुमार वेग बंध ल्यो नहीं तो दुहाई खुदा इकी मेरी भक्त॥ विधी॥ फेरणु
डसर साही १ की गोली ३ करणी एक एक गोली वार ७ मंत्र के फेर लडके की माई ना
खुराक णी फेर इसी मंत्र सों लडके उपर लडके उपर उडदके दाणा मंत्र के पाव णा ३ लडके
के मुख मे थुकाव ३ उसकी माई ते वार ७ डंकणी दोष जावे॥ पुनः डंकणी दा मंत्रः॥ ॐ ह्रां
ह्रां ह्रां ह्रां ह्रां क्रां ह्रां क्रां क्रां ह्रां क्रां ह्रां ह्रां स्वाहा ६८ इस मंत्र के जल मंत्र
णा पी ओ नो देणा डाकणी दोष जावे॥ अथ डंकणी के सिर मुनणा दा मंत्रः॥ जा
नु अमनु अमेरल चूरे लगर कुवांड चक्र वाड कि अकराउ अलागा पफिरि डिठो
रि उथणा भवणा काला हंसा नि मेला पास समुद्र तीर पंथ पमारे विहरे निर्विष करे सरी रामः॥

र॥ जेजे करनें तेंतें मरते उलटा देतहि परपरे : पाँच पाँडोकी कच्च थाप असुकेकी पिंड
आरा मास गुदहाड चाँम रुंदर दनर हू मेरी भक्त : पिली ऊकाहू करि मुनगी ओंस्त्रे
परतीन वार मंत्र पढे ९५ अथ जंत्रीमशाराका॥ ओंनमो आदेस गुरुको आदिनाथको
आदेस चले पवराचले पाणी चले नारसिंहवेठा चले देवभूत चले वविसडाकणी
चले जोगणी पर चले जंडीमशाराचले कामराटूणा चले सिंहराजाटूणा चले
करीयाचले कराया चले जप्या चले जपाया चले कील्या होई कीलाया चले
ठाक्या होई ठकाया चले जलीकियोगनी चले छतिशमशाराचले हिरकमशारा
चल चले रेवावा जोमेरे फलानदहुमा चलमारहू तामाई वहणाकी सजामफाधरे
मेरीभक्त० कच्चील सरीरवापाणी साकलूणा अकारवार ९४ वार २१ अथ मशारा
कामंत्र॥ ओंनमो आदेस गुरुको सारकीलीलाहुकीपीहणा वांधा वार खुटकाम
शारा छलकरे छलिहकर ताहुगामंत जतीकी आरा मेरीभक्त० सातवारमं

त्रपढे कँ करीमंत्रके सटे मशाणा जाये अथभूतप्रेतचौथिकामँत्रः॥ सिरसों धाणा पँनर
गस्वारी देणा पारसमुद्र संगला दीप उलंक पार किलंक विलंका पार चुहड उद्धार चुह
उद्धारका पुत्र वीरनारसिंह अपराणी मुद्रा धारना हाकणा डाकणा चकर चूकर पार
गुरुकी शक्त॰ अथगर्भस्थँभनमंत्र॥ उँह्रीरें श्रीकिरत्न स्वाहा वार ७ मोलीके धागे गँ
ठ ७ देणी धागा सरीर प्रमाणा मिलला मिणालाणा कंठ वांधणा प्रसूत होसे जब गंठ खो
ले प्रसूत होस॥ अथयोगिणी दृष्टरक्षाका मंत्रः॥ सिरसों चारल्ल करणा समुद्र मध्येयो
गणी आया भूतं भूतणी आये नाचे आवे गावे शूलपीडा मुकाई चुकावे डंडडाकणी
मशाणा वायणी वाट घाट करणी उर्ध्वब्रह्मांड फूटमरणी गुरुकी शक्त॰॥ अथमँत्ररक्षाका॥
योगणी पूजाका॥ कालीकालीमहाकाली सिरजटावंत्ली वा हाथपांव करे रघवाली हाड
भनीकालजाबाई मडे मशाणी तूमरजाई पवनभायणी विस्यमानी गुरुकी शक्त॰ मँत्र
रक्षाका॥ ॐ उलंटत नरसिंह पलंटत काया ताकारन नरसिंह बुलाया जो धावे हमकों फि रामः॥

रिपरे पिंडपानकीरक्षाश्रीनरसिंहदेवकरे मेनकवलकेयाँभ याँभश्रीनरसिंहनेलीया
उरभूतप्रेतकीयासंहार दक्षिणवंधपश्चिमवंध उत्तरवंध पूर्ववंध वंधधाराकूरोसुरमन्द
त्युपतालवंधा लाहकाकीलीतांवेकीसलाई हनुमंतजतीपरुवा श्रीनरसिंहरक्षापाले
मेरीभक्तगुरुकीशक्ति मंत्रपढवार२१॥ पुनः रक्षामंत्रः॥ आगरयकालिका पछेरयत
नदत्तः दाहणारयेहरणमंत्त वामरयनारसिंह वज्रकाकोटवज्रकीयाई जोमेरीरक्षापिं
डआशाकीनाकरेतोडुहाईवदरीनाथकी॥ विधी॥ चोतर्फचोकीवठेरकारनाम अपशोलि
केरक्षाकरेसही१ अथमंत्रहाजरात॥ ॐजोकुलजाकानमोकुलमान अक्षागुरु
महमदशिष्यकोरगावीकजोनमानमहंमदकेकलमेकी आगाप्तिमकोलगेवज्रकेवा
गा दावदगुरुतंसमिद्धिचेला जंगीहंकमिहोन उपलामह सहीदजंगीमहादचले हंका
रेमेकारइचले हंकारेनईसमाफीलचुले हंकारेयवराइचले हंकारे अजराईचले
हंकारेय अमलकमलेचले अहीयामनेहुकमबुदाईकेनाम मुवकलोहरवलाइहाजर रामः

शबद २॥ अथ महाजालमाडा॥ ॐकार आदि कारकरता वेदन हरता चौहे एक सरजनहार:
जुग चार तीन लोग चारवेद पांच पाडो छे मार्ग सात समुद्र आठ दिशा नवग्रह दशावतार:
ग्यारा रुद्र बारामास तेरा तंबोल चोदा लंब: पन्नातिथी सोलाकला सत्रा सत अठारा
रजन उनीसलाइ वीस विस्वे चारवाणी चारवाणी पचभूतात्मा नौनाथ चौराशी सिद्ध
चौशठ योगणी अष्टकुलीनाग तेत्तिश कोडदेवता चौराशी सहस्त्र जीउनो आकाश पाता
ल मृतमृत्य मंडलरैन दिनपहर पडिइपल योपलयो महूर्त ज्हंजशाकध्वस्त प्रेतरे क्षेमो
इभकाक मिंडमोदव दानव भूत्तप्रेत राक्षस पापपरी आवाल विनाशा दीठ मूठडायणा
डंकणा मेलमचानी वहोरी उठोरीगधी निनामि वाध थरोला कंथर परवाली वावासी
र नसूर अरधंगी दधोरी करोदीन हरुवाड हरुवाजलंधर फूकंभर चरथीया वादंगि
रा विसरीया आमवात पित्तोरता पित्तगोला वाहला कसूवा कसेली रोगसोग हूक
भूक जानूवा चुडैल सीसी आधासासीकोटक हनूवा मृगी पिनस वायजुरी लोहूवलोम रामः॥

आमगंडवफोडा जिगर चोटपेट रुदि रुदला रुन्हलाय पोयपनदीनाले घरबाह हँस
सकार कोराआर मास हाड गुद मुंहनासिकाना टिका चोनोलवाय बुरनासिनजरताय
वलसिर भगंदर सिलेमान विल्लराड अल्ह सिलेमान तहांजात्तक सवालाय पिकव
रकी थायनाजल २ भस्मंतहोय दादे आदमकी शक्ती शेषसर्प अहि आमनेदीकी भक्ती
मेरी भक्ती फुरो मंत्र ईश्वर की वाचा फुरे कालाहसे निर्मला वसे समुद्रा नीर पंथ पसारे : विषहर
रमलकारे सरीर ॥ इति सर्वडुष्टमंत्रः अथ चिंतामणी मंत्रः ॥ ॐ नमो अप्रतिहत्ति वलवीर्य
पराक्रमे दिनकर सहस्रवाहुया भूत वेताल यक्ष राक्षस स्कंद विनायक ग्रहदेव ग्रहवालग्र
ह अष्टग्रह दह २ हन २ पच २ मथ २ प्रमथ २ विध्वंसय विद्रा विध्वंसय विद्रावय भो भो चिं
तामणी महाविद्या पठितसिद्ध महाविद्यो मथ विनाथ दीजी एकाहीकंच द्वाहिकंच त्रा
हीकंच चतुर्थकंच मुहूर्तकंच मासाधिमासासिक षण्मासीकं दिनज्वर पित्तज्वर
रात्रुज्वर संध्याज्वर वातज्वर पित्तज्वर दाहज्वर श्लेष्मज्वर संन्निपातज्वर

ॐ
मं·मु·
२२

सीतज्वरातश्च शिरोत्यश्च हन २ त्रिशूलेन हन २ चक्रशूलेनो हन २ पाशुशूलेनो हन २
कुंभकामिनी सर्वबाधा विनाशनि ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं हूं हूं यशावाह विनाशय शीघ्र बलवाहि
णी जांभ वीर्य्य स्थंभनी मोहनी कालरात्री नरसिंह स्या सिंहि चल चलः ठः ठः ठः हुं हुं
हुं हुं ह्रीं श्रीं श्रीं फुं फुं रं रं हुं हुं फट् माये परम माहामदनी हृत्सनिधौ मरक्ष याया या हिर
क्ष २ अमुकसर्वभूतमेया पदुवेभ्योस्वाहा १ इतिचिंतामणी विद्याः शुभम् मस्तु भू-

कुंकुमगोरोचनस्य यस्यनामा लि
ख्य शीर्षे वधयत सर्वग्रहय
क्षराक्षस डाकिनीशा कि
नी स्वप्नदोषा नश्यति
सर्वपद्वा साम्य
त्तिः शत्रुनाश
त्तिः

वा षट् जूं देवदत्तरक्षवा
षट्
गोरोचनाक्षरैर्भूर्ये लिख्यज
लस्याप्य प्रत्यहं पुष्पे पूजय
त्त भीर्तिर्भवति

ॐ ह्रीं जूं
ॐ नामः जूं
ॐ जूं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

रामः॥
२२

वामहस्त
वन्हगा
चंपट
जिति
सत्य

देवदत्तः

तमाक्षरीनेभूर्य्य
वस्यनामलि
ख्यकंठवधा
सोभाग्यभव
त्तिः

कुंकमादिनाभू
लिख्यवाहो
त्र चक्षु
रो नश्य

देवदत्त

यययययय

इदंजंत्रमर्दवश्यकरोकिं
कुफट् मर्दवश्यं फरी

अष्टगंधेन भूर्य्यवस्यलिख्यकंठ
वोध्वा यतापयत दिव्यस्त गर्भ भवति

देव
दत्त

गोरोचनादि दि
ग्भ्यां लिख्य वाहू
कंठधार यत्तस
पविषनश्यति:

अष्टगंधे भूर्य्यलिख्य
वस्यनामलिख्यवाहू
धारयत्तथा कंठवधा
सोभाग्यं भवति:

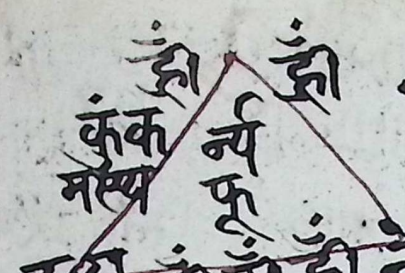

ॐ नमो रुद्राय महाबलाय शमदाय महाबलवाय पराक्रमाय
महारौद्रा तत्तत्व रौद्राय महारुपाय नमः ॐ जंभे नमः मोह
नेनमः ॐ नाथे नमः वालकस्य सूर्य वीरेषु नाम धीयन न द्रचन
न चिरज्य भूर्य लिष्य दुष्ट निवारयति अथ द्वितीय जंत्रलि
नारीरक्त चलावणा चक्र पांज चक्र करणा पहरो नोदणा सत्य

ॐ गुरु सुगुरु सत्तगुर मनाए: प्रथम श्रीरामचंद्र को गाए हनमंत
अंजनाके पूत्त जाने: कपड पछाडे त्ती नसैये सठ भूत: भूत भूत्त की जात
वथानु: आकासर: मकसर कचीया मसान: ईहां कमारत गरदीया मसो
न: ॐ ह्रीं स्चली भूरीचली: भीमकी गदा चली: अर्जुनके वान चले: सीताको सत्त चले:
सहदेवकी पाथी चले: गमारी कुहारी को चक चले: पीढेवठ मंदोदरी चले: डोलावेठ
रामन चले एक नसो एकला विर हनमत्त: अंजनीके पूत्त हांक मार तूल चल्यो: कोन को

नकोंलेचल्यो: हवित्तवंदीचारलचली पछीतवंदीडंकणीचली: मंथणीचली: रक्ता
चली: मसानीचली: सुरयणीचली: दवाचली: फिपराचली: कलजाचलि: हनुमंत
अंजनीकेपूतहांकहमारतुलेचल्यो: कोंन कोंनकोंलेचल्यो आकासपरीकोंलेच
ल्यो: पातालपरीकोंलेचल्यो: मानपरीकोंलेचल्यो: स्यामपरीकोंलेचल्यो: इंद्रपरीको
लेचल्यो: लोलिपरीकोंलेचल्यो: वैरीपरीकोंलेचल्यो: हनमंत्रे अंजनीकेपूतहांकमार
तुलेचल्यो: कोंन कोंनकोंलेचल्यो: वामनसेभेरोचले: चौसठयोगणीचले: हीरंदीयेवा
डीमोंकत्तिकीकवाडीमोंवोटीवोटीमोंः हाडहाडमोंः चांवचांवमोंः रूदरूदमोंः जोवना
रीवहत्तरकोठेमोंः वेवेदहनुमंत अंजनीकेपूतः हांकमारतुलेचल्यो: कोंनकोंनकोंल
चल्यो: रुडरुपटकोंराहकोंवाटकोंगलिकोंकोंचेकोंः छडीकोंमकोलिकोंः रुपकों
रुपकोंः नदीकोनालकोंः सुकोंवायेकोंतलायेकोंः कोपकोंः जातकोंः प्रजातकोंः ठने
कोंः ठनेकोंः ठोनाकोंः कर्कोंः कर्तुकोंः हनमंत अंजनीकेपूतः वाराकामकेपछाडीः
चाविमकोसकीगीदघरमार उलटंतवेद पलटंतकाया: श्रीसीतापतीरामजीसमहाया:

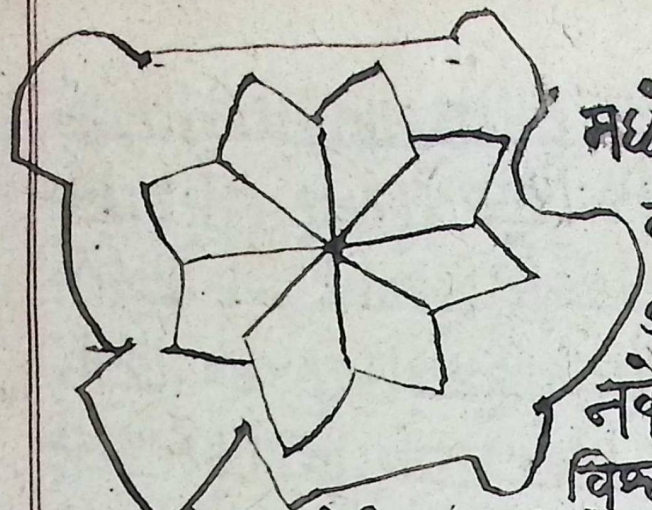

मध्येवासुदेवायनमः महालक्ष्मैनमः ऽथवामहा
लक्ष्मीवासुदेवाभ्यांनमः अष्टतता अष्टपत्रे सुभ
द्रायैनमः ब्रह्मणेनमः सुरभेनमः सूर्य्यायनमः धे
नवेनमः वहुरूपायनमः पृथिव्यैनमः अनंतायनमः
विश्वरूपायनमः दिग्धेनवेनमः सिद्धेनमः सिद्ध्यन
मः शांत्यैनमः रोहिनीदिग्धेनवेनमः चंद्रमसेनमः महादेवायनमः देव्यैनमः रक्षो
हणांवलगहनंवैस्नवीमिदमहंतंवलगमुक्तीरामिस्वाहा : इतिपायसंनहुत्वाः ग
वामभिषिंच्यः कलशोदकेनः अविनयमविनयं भजशमयशिव
रमयस्वाभूतदयाविस्तारतारयः सूर्य्यपत्रोपरि अष्टगंधनलि
खयते स्त्रीधार्य्यपुर्षवस्यं पुर्षधार्य्यते स्त्रीवश्यमु ॥१॥ रामः॥

वस्यं	वस्यं	वस्यं
ॐ	श्रीं	ह्रीं
जीं	इवं	ह्रीं
तांध	वांध	वस्य
ह्रैं	ह्रैं	ह्रैं